अक्तूबर २०१६

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

सच्चा धर्म

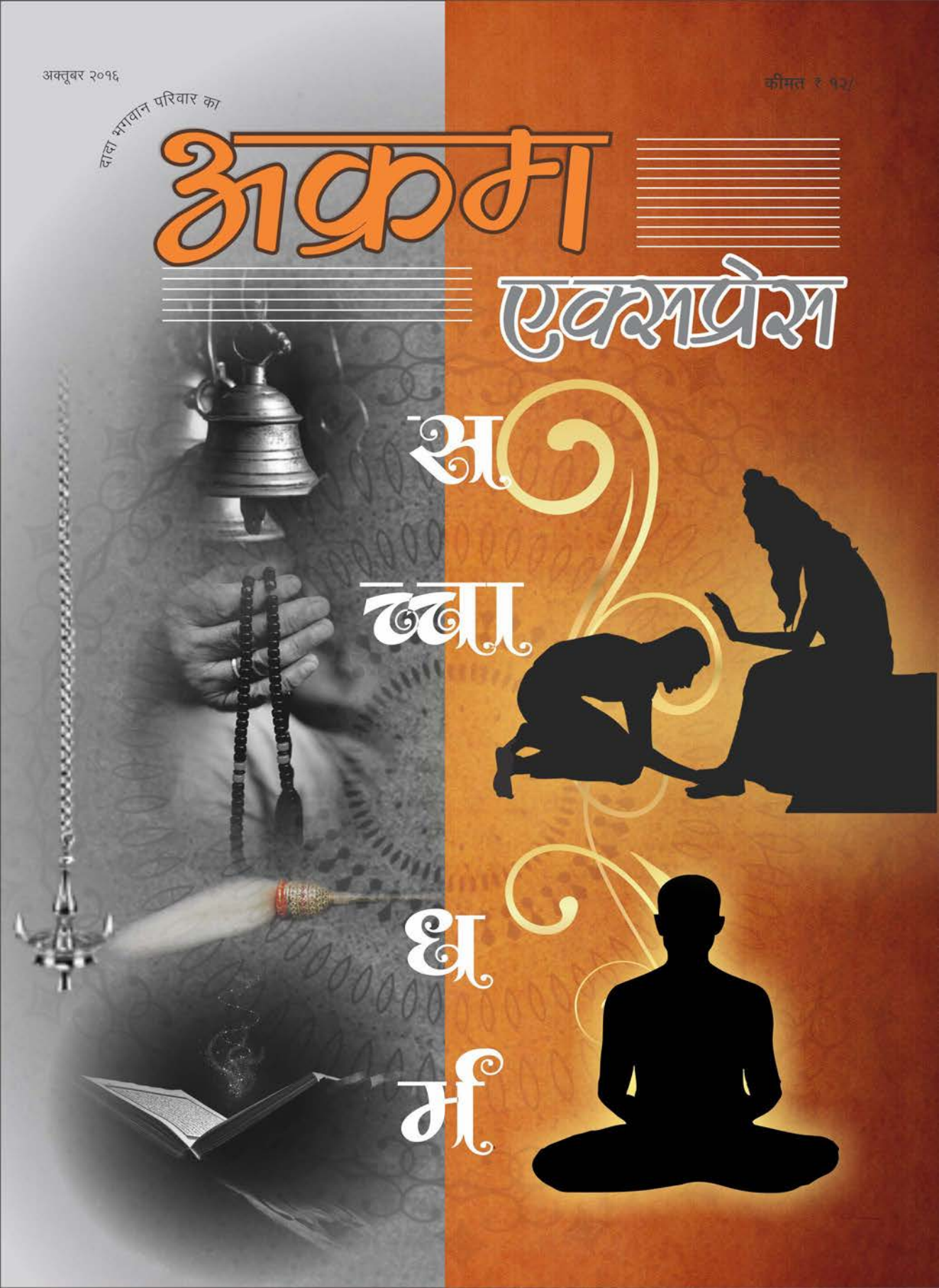

सच्चे धर्म का उपयोग

गोरखपुर गाँव की सीमा पर गुरु रामदास का एक बहुत सुंदर गुरुकुल था। गुरुकुल के पास एक नदी बहती थी और आँगन में एक विशाल बरगद का पेड़ था। गुरुकुल का वातावरण बहुत आनंदमयी था। यात्री गुरुकुल में आकर विश्राम करते और गुरु जी से थोड़ी धर्म की बातें सुनते। गुरु रामदास की विद्या की चर्चा तो गाँव-गाँव में होती थी। गुरु जी से दो-तीन बातें भी सुनने मिल जाती तो लोगों के जीवन में शांति हो जाती।

जब पंडित भैरव ने यह चर्चा सुनी, तब उनके मन में उत्कंठा जागी, "ऐसा क्या है गुरु रामदास में, कि उनके ज्ञान की और धार्मिक समझ की चर्चाएँ गाँव-गाँव में होती हैं?" गुरु रामदास की परख करने पंडित भैरव गोरखपुर जाने के लिए निकल पड़े।

सर्दियों की दोपहर थी। गुरु रामदास बरगद के नीचे अपने शिष्यों के साथ इधर-उधर की बातें कर रहे थे। तभी दरवाज़े पर खटखट हुई।

"नमस्कार, मेरा नाम भैरव पंडित है। गुरु रामदास के साथ वार्तालाप करना चाहता हूँ", पंडित जी ने शिष्य को संक्षेप में अपने आने का उद्देश्य बताया।

गुरु जी ने बहुत ही प्रेम से पंडित जी का स्वागत किया। खाना खाने के बाद गुरु जी पंडित जी को अतिथिगृह में ले गए।

"रामदास जी, मैं आपको अपना परिचय दूँ। पिछले २० सालों से मैं शास्त्र पढ़ रहा हूँ। कोई भी शास्त्र खोलकर आप मुझ से प्रश्न पूछिए। यदि मुझे आपके सवाल का जवाब नहीं आए तो मैं अपना नाम बदल दूँगा।", इस तरह पंडित जी ने अपनी विद्या का बखान किया।

गुरु जी बोले, "बहुत आनंद की बात है।"

पंडित जी ने गुरु जी से विनती की, "नहीं, ऐसा नहीं है। मेरी इच्छा है कि आप मेरी परीक्षा लीजिए। मेरे गाँव के लोग

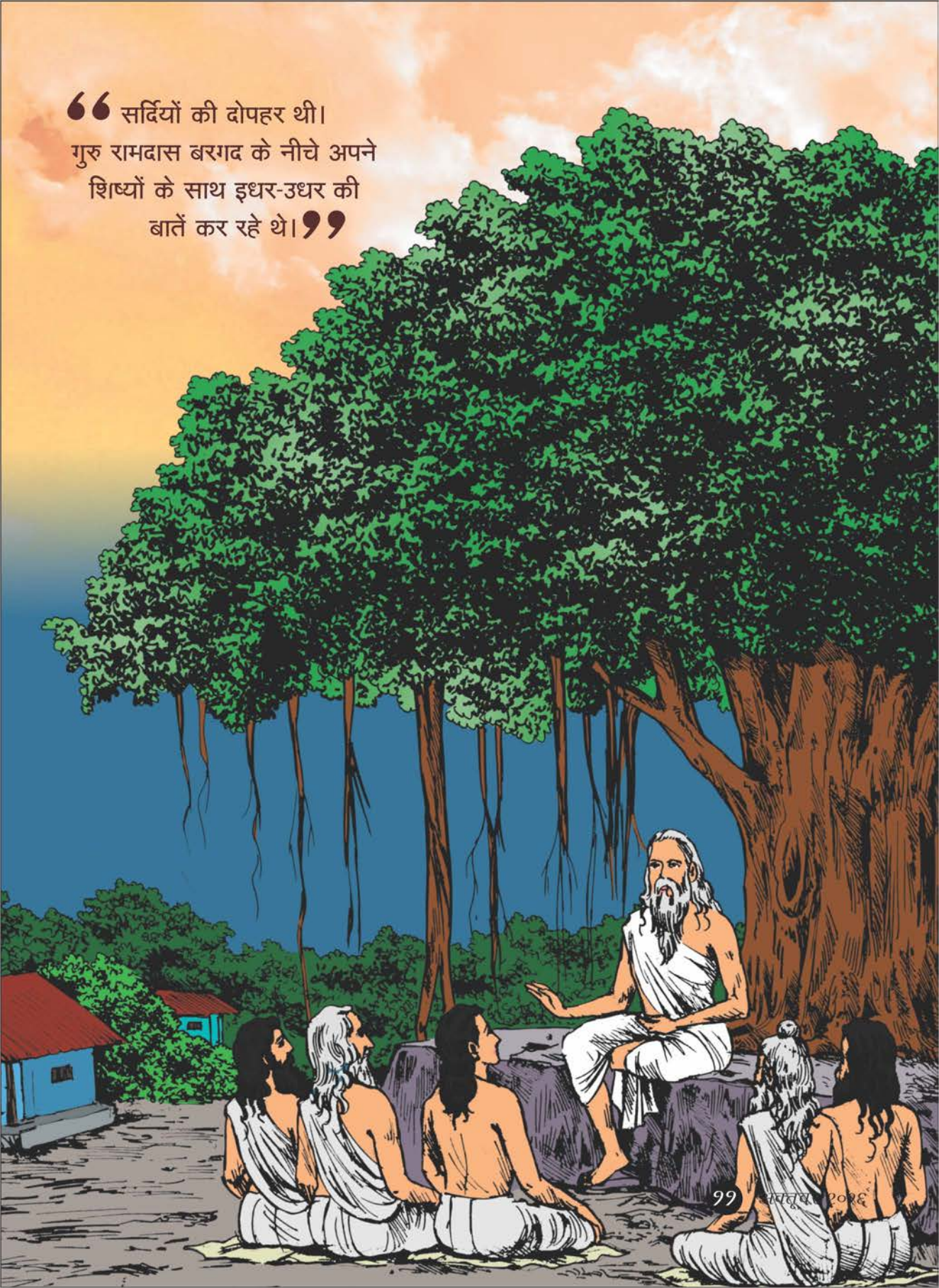

“सर्दियों की दोपहर थी। गुरु रामदास बरगद के नीचे अपने शिष्यों के साथ इधर-उधर की बातें कर रहे थे।”

तो मुझे संत समझते हैं लेकिन मेरी इच्छा है कि आप भी मुझे संत की तरह स्वीकार कीजिए।"

आश्चर्य के साथ गुरु जी ने सवाल किया, "लोग आपको संत समझते हैं?"

छाती ठोककर पंडित जी बोले, "हाँ, हाँ, इसमें ज़रा भी शंका नहीं है। धर्म संबंधी किसी भी चर्चा में मुझे कोई नहीं हरा सकता।"

"लोग आपको संत मानते हैं, यह जानकर मुझे आश्चर्य हो रहा है! इतनी आसानी से आप लोगों को कैसे ठग पाए?"

यह सुनकर पंडित जी गुस्से से लाल-पीले हो गए, "यह क्या कह रहे हो? आपको कुछ एहसास है?"

"पंडित जी, शांत हो जाइए। यदि २० साल की साधना के बाद भी इतनी छोटी सी बात आपको इतना ज्यादा व्याकुल कर रही है तो फिर अभी तो आपको बहुत आगे जाना है। यह तो आपने मुझ से परीक्षा लेने के लिए कहा इसलिए..."

लेकिन गुरु जी की बात पूरी हो उससे पहले ही पंडित जी आग-बबूला होकर आश्रम से बाहर निकल गए।

शिष्यों ने पंडित जी से रुकने के लिए बहुत विनती की लेकिन पंडित जी तो टस से मस नहीं हुए।

गुरु जी बरगद के पास आकर बैठ गए। सभी शिष्य चटाई बिछाकर नीचे बैठ गए।

"गुरु जी, पंडित जी का ऐसा मिज़ाज देखकर आपको क्या महसूस हुआ?"

गुरु जी ने एक गहरी साँस ली और बोले, "पंडित जी का मिज़ाज देखकर मुझे एक कहानी याद आ गई।"

एक साधु महाराज थे। एक बार साधु महाराज के सिर में बहुत सारी जूँएँ हो गईं। बहुत चुभन हो रही थी। साधु महाराज जोर से सिर खुजाते तो ५-१५ जूँएँ मर जाती। खुद की वेदना से ज्यादा, जुओं के मरने से साधु महाराज बहुत दुःखी हो जाते। अपने एक भक्त को साधु महाराज ने कहा, "भाई, शहर से एक अच्छे नाई को बुलाकर लाओ। मुझे सिर के सभी बाल मुंडवाने हैं।"

दूसरे दिन वह भक्त नाई को लेकर साधु महाराज के पास आया। साधु महाराज ने नाई से कहा, "भाई, तुम बाल इतना सँभालकर काटना कि जिससे सिर की एक भी जूँ मरे नहीं।"

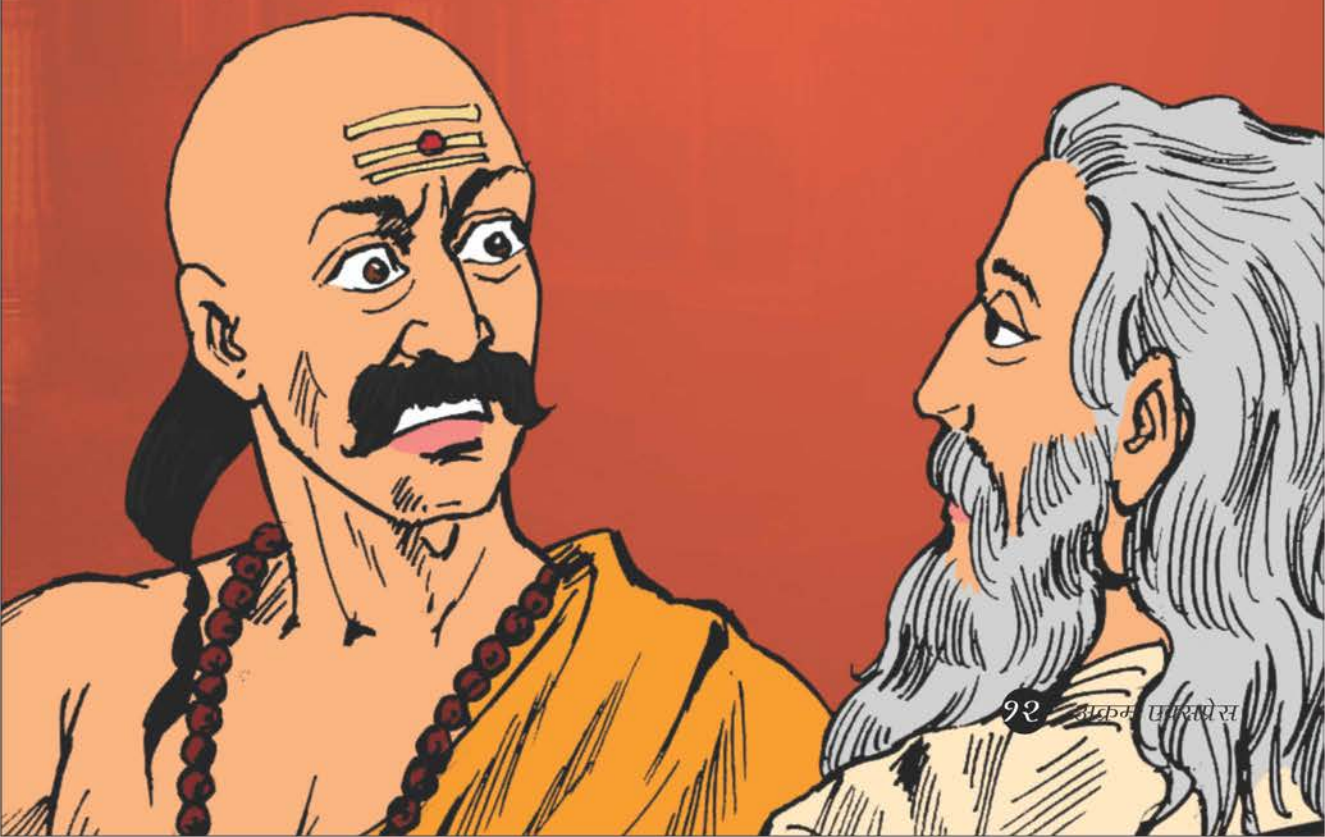

नाई दयालु था। साधु महाराज के जूँओं से भरे हुए सिर का एक-एक बाल नाई ध्यान से काटने लगा। सभी बालों को काटने में सात घंटे लग गए लेकिन सिर की सभी जूँएँ बच गईं! नाई की बाल काटने की कुशलता से खुश होकर साधु महाराज ने उसे अपनी झोंपड़ी में आने का न्योता दिया।

साधु महाराज ने नाई से कहा, "बेटा, जीवों के प्रति तुम्हारी दया देखकर मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ। सालों से मेरे पास पड़ी हुई पारसमणि किसे दूँ? इस उलझन में था लेकिन मुझे लगता है कि तुम इस पारसमणि के लायक हो। यदि इस पारसमणि को लोहे से छुओ तो तुरंत ही वह लोहा सोने में रुपांतरित हो जाएगा।" ऐसा कहकर साधु महाराज ने डिब्बी खोली और पारसमणि नाई के हाथ पर रख दिया। नाई तो साधु महाराज के पैरों में गिर गया और साधु महाराज का आशीर्वाद लेकर अपने घर की ओर चल पड़ा।

उसके आनंद की कोई सीमा नहीं थी। इतनी मामूली सी सेवा का इतना बड़ा फल! उसने अपनी दुकान की सभी लोहे की चीज़ों को पारसमणि से छुआ। सभी चीज़ें सोने की बन गईं। चीज़ों को सोने का बनाकर, नाई ने पारसमणि सँभालकर रख लिया। दूसरे दिन दुकान के बाहर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ बोर्ड लगाया : "इस दुकान में बाल कटवाने और हजामत करवाने के लिए ज़रूर पधारिए, क्योंकि हम सोने के उस्तरे से आपकी हजामत करेंगे और बाल भी सोने की कैंची से काटेंगे।"

बेचारा नाई! पारसमणि मिल गया फिर भी रहा तो नाई ही न! टन के लोहे को सोने में बदल दे ऐसी प्रचंड ताकत रखनेवाला पारसमणि का उपयोग, उसने कैंची और उस्तरे को सोने का बनाने में किया।

जिस तरह नाई को पारसमणि का सही उपयोग करना नहीं आया, उसी तरह पंडित जी को भी सालों की साधना के बाद सच्चे धर्म का उपयोग करना नहीं आया। ज़रा से अपमान से पंडित जी हिल गए। सच्चे धर्म की ताकत पारसमणि से भी अनेक गुना ज्यादा होती है। लेकिन उसका यथार्थ उपयोग करना आना चाहिए। अपने एक-एक शिष्य पर मीठी दृष्टि डालके गुरु जी बोले, "मेरे प्यारे शिष्यो, शास्त्रों का रटन और पठन करके आप गुरुकुल की परीक्षा में तो शायद पास हो भी जाओगे लेकिन धर्म से मिली हुई समझ, जब मुसीबत के समय हाज़िर होकर, दुःखों से मुक्ति दिलाए तब जीवन की परीक्षा में पास हो सकोगे। समझ में आया आपको?"

सभी शिष्यों ने नम्रता से सिर झुकाया और सच्चे धर्म को निष्ठापूर्वक अपनाकर जीवन की परीक्षा में पास होने का निश्चय किया।

चलो खेलें...

9

नीचे दिए गए बोक्स में से बाजु में दिए गए शब्दों को ढूँढो।

य	भे	मं	र्प	ण	सं	क्ष	य	त्र	भे	रि	सं
चा	रि	त्र	सं	भे	य	चा	आ	र्प	ण	य	त्र
ण	म	य	स्थि	स	म	र्प	ण	सं	म	क्ष	र्प
र्प	मं	चा	म	दा	म	य	त्र	र्प	ण	आ	भे
रि	क्ष	र	आ	चा	र	चा	आ	चा	र्प	ण	आ
चा	ण	स्थि	रि	र	क्ष	ता	रि	क्ष	स्थि	म	त्र
चा	आ	त्र	आ	चा	ण	चा	र	अ	ता	सं	क्ष
क्ष	नं	र	रि	दे	र्श	ता	चा	द	भे	रि	ता
आ	द	र्श	द	र्च	द	रि	ता	र्च	क्ष	त्र	स्थि
रि	द	ता	स्थि	ता	र्च	क्ष	चा	ता	आ	द	र
द	आ	र्च	दे	घा	द	आ	रि	अ	भे	द	ता
चा	र्श	क्ष	व	र	दा	न	क्ष	र्च	र्च	र्श	स्थि
र्च	स्थि	भे	द	अ	र्च	द	घा	ना	भे	सं	र्प
व	ना	ता	र्श	द	ता	स्थि	र्च	अ	त्र	क्ष	र्च
स	मा	धा	न	घा	अ	व	ता	र्च	र्श	चा	भे

समर्पण
आनंद
आदर्श
अभेदता
अर्चना
वरदान
सदाचार
स्थिरता
रक्षण
मंत्र
चारित्र
देवदर्शन
संयम
आचार
समाधान

२

धर्म, मंदिर और उनके सिम्बोल को जोड़ो।

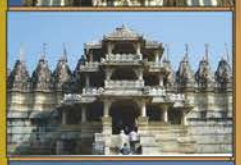

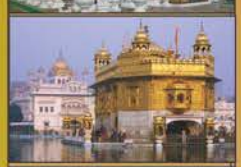
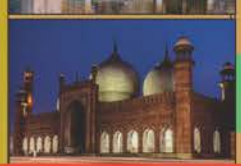

शीखधर्म

इसलामधर्म

बौद्धधर्म

हिन्दुधम

क्रिश्चनधर्म

जैनधर्म

नीचे दिए गए बोक्स में से बाजु में दिए गए धर्म के सिम्बोल कितनी बार हैं, उन्हें गिनो।

३

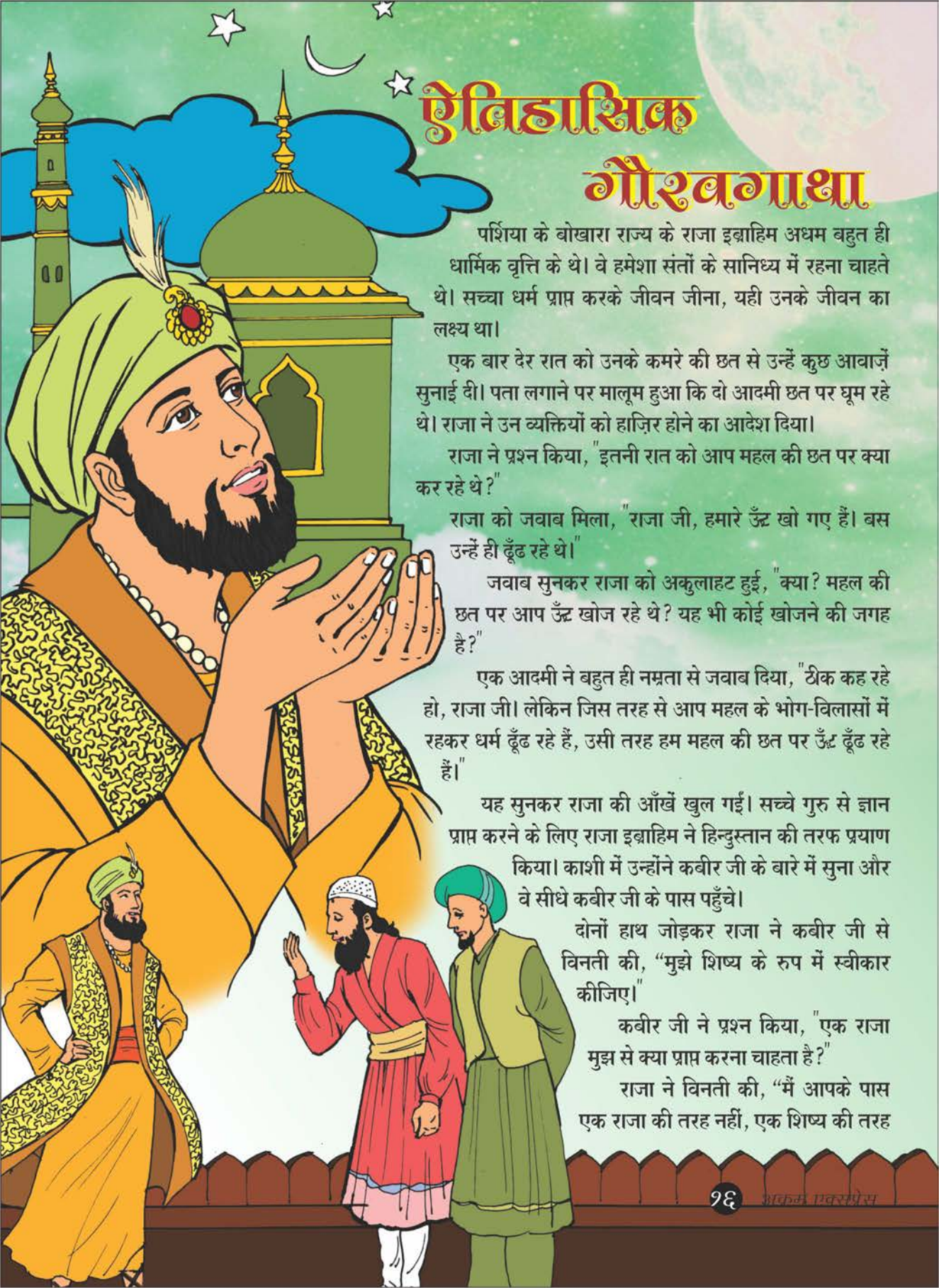

ऐतिहासिक गौरवगाथा

पर्शिया के बोखारा राज्य के राजा इब्राहिम अधम बहुत ही धार्मिक वृत्ति के थे। वे हमेशा संतों के सानिध्य में रहना चाहते थे। सच्चा धर्म प्राप्त करके जीवन जीना, यही उनके जीवन का लक्ष्य था।

एक बार देर रात को उनके कमरे की छत से उन्हें कुछ आवाज़ें सुनाई दी। पता लगाने पर मालूम हुआ कि दो आदमी छत पर घूम रहे थे। राजा ने उन व्यक्तियों को हाज़िर होने का आदेश दिया।

राजा ने प्रश्न किया, "इतनी रात को आप महल की छत पर क्या कर रहे थे?"

राजा को जवाब मिला, "राजा जी, हमारे ऊँट खो गए हैं। बस उन्हें ही ढूँढ रहे थे।"

जवाब सुनकर राजा को अकुलाहट हुई, "क्या? महल की छत पर आप ऊँट खोज रहे थे? यह भी कोई खोजने की जगह है?"

एक आदमी ने बहुत ही नम्रता से जवाब दिया, "ठीक कह रहे हो, राजा जी। लेकिन जिस तरह से आप महल के भोग-विलासों में रहकर धर्म ढूँढ रहे हैं, उसी तरह हम महल की छत पर ऊँट ढूँढ रहे हैं।"

यह सुनकर राजा की आँखें खुल गईं। सच्चे गुरु से ज्ञान प्राप्त करने के लिए राजा इब्राहिम ने हिन्दुस्तान की तरफ प्रयाण किया। काशी में उन्होंने कबीर जी के बारे में सुना और वे सीधे कबीर जी के पास पहुँचे।

दोनों हाथ जोड़कर राजा ने कबीर जी से विनती की, "मुझे शिष्य के रुप में स्वीकार कीजिए।"

कबीर जी ने प्रश्न किया, "एक राजा मुझ से क्या प्राप्त करना चाहता है?"

राजा ने विनती की, "मैं आपके पास एक राजा की तरह नहीं, एक शिष्य की तरह

आया हूँ। आपकी कृपा प्राप्त करके आपसे ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ। मुझे शिष्य की तरह स्वीकार कीजिए।"

कबीर जी ने राजा की विनती स्वीकार की तो सही, लेकिन राजा को कोई उपदेश या ज्ञान देने के बजाय अपने घर के छोटे-बड़े काम करने की सलाह दी। राजा ने दिल से कबीर जी की आज्ञा स्वीकार की और उनके कहे अनुसार घर के छोटे-बड़े काम करने लगे।

६ साल बीत गए। एक दिन कबीर जी की पत्नी ने कहा, "ये राजा सालों से हमारे घर काम कर रहे हैं। हम जो खाना देते हैं वे खा लेते हैं, जो काम सौंपते हैं वह करते हैं। कभी भी कोई शिकायत नहीं करते। मुझे लगता है कि आपको उन पर कृपा उतारनी चाहिए, उन्हें ज्ञान प्राप्त करवाना चाहिए।"

कबीर जी ने कहा, "नहीं, ये अभी मेरी कृपा के लायक नहीं हुए हैं। यदि आपको उनकी परीक्षा करनी हो तो मेरे कहे अनुसार कीजिए। घर की छत से राजा के ऊपर पूरे घर का कचरा फैंकना और क्या होता है, यह मुझे आकर बताना।"

कबीर जी के कहे अनुसार उनकी पत्नी ने राजा के ऊपर कचरा फैंका। जैसे ही राजा के सिर पर कचरा गिरा, वे चिढ़ गए और धीमी आवाज़ में बोले, "अगर यह मेरा राज्य बोखारा होता तो किसी को ऐसा करने हिम्मत नहीं होती।"

पत्नी ने कबीर जी को सबकुछ बता दिया।

इस बात को और ६ साल हो गए। एक दिन कबीर जी ने अपनी पत्नी से कहा, "अब मुझे लगता है कि राजा कृपा पात्र हो गए हैं।"

पत्नी ने कबीर जी से प्रश्न किया, "क्या राजा में सचमुच परिवर्तन आया है? लेकिन मुझे तो आज और ६ साल पहले के राजा के व्यवहार में कोई अंतर नहीं दिखता। वे तो पहले भी ऐसे ही विनयी और नम्र दिखते थे।"

कबीर जी ने जवाब दिया, "यदि आपको परिवर्तन देखना हो तो फिर से छत से राजा के सिर पर कचरा फैंको।"

पत्नी ने फिर से राजा के सिर पर कचरा फैंका। लेकिन इस बार राजा की प्रतिक्रिया पहले से बिल्कुल अलग थी। ऊपर देखकर राजा बोले, "खूब जीओ! यह अहंकार से भरा हुआ पुतला, इसी के लायक है!"

यह बात जब कबीर जी ने सुनी, तब वे बहुत खुश हुए। राजा को बुलाया और कहा, "राजा जी, आपकी साधना पूरी हुई। अब आप अपने राज्य वापस जाओ।" ऐसा कहकर कबीर जी ने राजा को दिल से आशीर्वाद दिए और उनके ऊपर कृपा दृष्टि बरसाई।

और इस तरह बोखारा के राजा इब्राहीम ने कबीर जी से सच्चा धर्म प्राप्त किया और क्लेश रहित हो गए।

मीठी यादें

नीरू माँ ने एक महात्मा को किसी काम के लिए राजकोट भेजा। वे महात्मा काम खत्म करके वापस आ रहे थे। तभी उनको नीरू माँ का फोन आया। नीरू माँ ने पूछा, "बस में बैठ गए? सब ठीक है?"

फिर कहा कि, "आपको आने में कितना समय लगेगा? आपका खाना भोजनशाला में रखा है। सीधे वहाँ जाना और खाना खा लेना।"

वे महात्मा सीमंधर सिटी के ही रहनेवाले थे। उनका खुद का घर और परिवार था। खाने का इंतज़ाम तो घर में ही आराम से हो सकता था। फिर भी नीरू माँ ने उनके लिए भोजनशाला में व्यवस्था की। उन महात्मा को इतना ज्यादा अहोभाव हुआ कि, एक तो नीरू माँ ने सेवा सौंपी और उसके साथ उन्होंने उनके खाने की भी व्यवस्था कर दी, इससे वे महात्मा तो गद्‌गद् हो गए।

तभी एक घंटे के बाद फिर से नीरू माँ का फोन आया कि, "आपका खाना तो रखा है लेकिन जब तक आप आओगे तब तक वह गरम नहीं रहेगा। इसलिए आने के बाद फोन करना। मैं गरम करवा दूँगी।"

थोड़ी देर के बाद फिर से फोन आया, तब उन्होंने सिटी में एक महात्मा के देहविलय का समाचार दिया, कहा कि "शायद आपको वहाँ सीधे जाना पड़े तो क्या करोगे?"

उस महात्मा ने कहा, "नीरू माँ, मैं अपने घर पर खाना खा लूँगा। आप मेरी चिंता मत कीजिए।"

वे महात्मा तो सोचने लगे कि, कहाँ नीरू माँ और कहाँ मैं? फिर भी नीरू माँ मेरा कितना ध्यान रखते हैं! इतने से समय में तो उन्होंने मुझे तीन फोन कर दिए और सभी समाचार ले लिए और दे भी दिए।

अद्‌भुत हैं नीरू माँ!

ऑस्ट्रेलिया – न्यूज़िलेन्ड सत्संग प्रवास के दौरान बच्चों के साथ पूज्यश्री

न्यूज़िलेन्ड

पर्थ

सीडनी

सच्चा धर्म

संपादकीय

बालमित्रों,

हम बचपन से ही धर्म करते आए हैं। कोई जैन धर्म, कोई वैष्णव धर्म तो कोई शिव पंथी और कोई माता जी को मानता है। ऐसा कहा जाता है कि जिस-जिस धर्म में जो-जो नियम हों, उसका पालन करना, वही धर्म है। लेकिन क्या इसे सच्चा धर्म कहा जा सकता है?

सभी "हाँ" कहेंगे। लेकिन ज्ञानियों की भाषा में धर्म की व्याख्या कुछ और ही है। तो आइए, आज हम इस नई व्याख्या को समझें और ज्ञानी जिसे सच्चा धर्म कहते हैं उसका अनुसरण करें।

- डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

संपादक:
डिम्पल मेहता
वर्ष : ४ अंक: ७
अखंड क्रमांक: ४३
अक्तूबर २०१६

....

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डोलर
यू.के : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

Akram Express

October 2016
Year : 4, Issue : 7
Conti. Issue No.: 43

BALVIGNAN
Fun 'n' Gyan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

સીડની

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published

दादाजी कहते हैं...

सामान्यतः जगत् के लोग धार्मिक क्रिया करनेवालों को धर्मिष्ठ इंसान समझते हैं। जो रोज़ मंत्र बोलते हैं, जाप करते हैं, देव दर्शन करते हैं, एकादशी का व्रत करते हैं, दिन में सिर्फ एक समय खाना खाते हैं, उपवास करते हैं, रात को खाना नहीं खाते, कंदमूल नहीं खाते, पूजा-पाठ करते हैं, ध्यान करते हैं, नियमित प्रवचन सुनने जाते हैं, शास्त्रों का अध्ययन करते हैं, उन्हें लोग "ये बहुत धर्म करते हैं" ऐसा कहते हैं। लेकिन हकीकत में ये सभी क्रियाएँ धर्म की तरफ ले जाती हैं। "सच्चा धर्म किया", किसे कहा जाएगा? कि जिसका परिणाम आए। कोई अपमान करे और अगर थोड़ा सा भी असर हो जाए, तो अभी तक जो कुछ भी धर्म किया, उसका परिणाम नहीं आया, ऐसा कहा जाएगा।

क्षण-क्षण ज्ञान हाज़िर रहे, उसे धर्म कहते हैं। धर्म रक्षा करता है, शांति देता है, समाधि देता है लेकिन चिंता नहीं होने देता। चिंता हो, उसे धर्म नहीं कहते। अनंत जन्मों से धर्म किया लेकिन समय आने पर हमारा रक्षण नहीं हुआ तो हमने धर्म किया, ऐसा कैसे कहा जा सकता है? धर्म तो उसे कहते हैं जो मुसीबत में रक्षा करे। क्रोध, मान, माया, लोभ के सामने धर्म हाज़िर हो जाए और हमारा रक्षण करे। जैसे कि यदि कोई गाली दे तब धर्म हमारी मदद करे। हमें असर नहीं होने दे, सभी तरह के दुःखों से मुक्ति दिलाए, वही सच्चा धर्म है।

यदि किसी भी प्रकार का धर्म करते हैं, तो उसका कुछ मापदंड तो होना चाहिए न? जैसे बुखार आया हो तो थर्मोमीटर बताता है कि बुखार है या उतर गया, उसी तरह धर्म है या नहीं है, उसका थर्मोमीटर क्या है? हमारी मनपसंद चीज़ खो जाए और चिंता हो जाए! "अरे, नए जूते कोई ले गया" तो सारा दिन मन में या लोगों से ऐसा कहते रहते हैं कि, "जूते गए", तो फिर इतना सारा धर्म किया तो उसका फल कहाँ गया? इतने सारे मंदिरों या देरासरों में दौड़ते रहे, फिर भी मुसीबत के समय धर्म हाज़िर नहीं रहा तो भूल कहाँ रह गई है?

परिणाम आए वह धर्म और परिणाम नहीं आए वह अधर्म। परिणाम क्या आता है? तो कहेंगे, कषाय भावों को हल्का करे, कम करे। जैसे-जैसे कषाय भाव कम होते जाएँगे वैसे-वैसे खुद की शक्ति व आनंद बढ़ता जाएगा। अपनी शक्ति पता चलती है कि ओहोहो! हमारे अंदर कितनी शक्ति है! हमारे अंदर इतनी सारी शक्ति कहाँ से आई? इसलिए धर्म इसे कहेंगे। नहीं तो बचपन से लेकर ठेठ मृत्यु तक ऐसे ही रहते हैं तो उसे धर्म कैसे कहा जा सकता है।

क्लेश रहित होना ही महान धर्म है। क्लेश है वहाँ धर्म नहीं है और धर्म है वहाँ क्लेश नहीं है।

यह लो नई

चाहे किसी भी तरह के संयोग आएँ फिर भी स्थिरता नहीं टूटे, ध्येय नहीं बदले, तब "उसने धर्म प्राप्त कर लिया" ऐसा कहा जाएगा।

ज्ञानी की आज्ञा का पालन करनेवाले को सभी धर्मों का सार मिल जाता है। ज्ञानी को खुश रखने से ज्यादा उत्तम धर्म कोई नहीं है। ज्ञानी की आज्ञा पालन करने से ज्ञानी खुश रहते हैं।

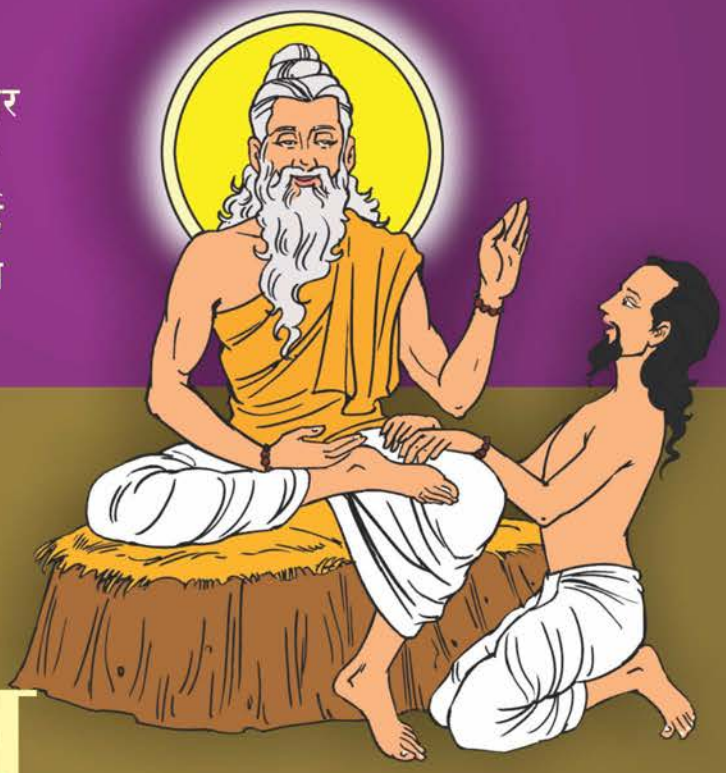

ही बाल

हर एक धर्म में माफी का महत्व बताया गया है। क्रिश्चन, मुस्लिम सहित और हमारे यहाँ भी प्रतिक्रमण होता है। जैसे इस काल के इंसानों को धर्म जानना हो तो हम उसे क्या सिखलाते हैं कि यदि तुम से झूठ बोला गया तो कोई हर्ज नहीं, जो मन में है तुम उससे अलग बोले उसका हर्ज नहीं लेकिन तुम्हें उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए कि फिर से ऐसा नहीं बोलूँगा। हम प्रतिक्रमण करना सिखलाते हैं।

परिणाम लाए, वह धर्म

समर कैम्प का अंतिम दिन था। सभी युवक हॉल में बैठे थे। सेशन का टॉपिक था - पॉज़िटिव दृष्टि।

सभी ध्यान से अपूर्व भाई की बात सुन रहे थे।

बोलो, ऐसी दृष्टि जीवन में अपना लें तो कोई दुःख रहेगा? नुकसान में भी फायदा दिखे तो हम कितने आनंद में रह सकते हैं। जो चला गया उसका दुःख नहीं होता, लेकिन जो बचा उसके सुख में तो रह सकते हैं।

बट, दिस इज़ इम्पोसिबल। ऐसी धर्म की बातें डिस्कस करना आसान है लेकिन अप्लाय करना बहुत मुश्किल है। यह तो जिसके सिर पर मुसीबत आ पड़ी हो उसे पता चलता है।

सौमिल, बातें सिर्फ डिस्कस करने के लिए नहीं है। इन बातों से मिली हुई समझ यदि हमें मुसीबत के समय हाज़िर हो जाए और हमारा रक्षण करे, वह महत्वपूर्ण है।

पॉज़िटिव दृष्टि

और उसे ही धर्म कहते हैं, जो मुसीबत के समय सच्ची समझ देकर हमें दुःख में डूबने से बचा ले। इतनी सी बात याद रखोगे?

आई विल ट्राय अपूर्व भाई!

अपूर्व भाई ने सौमिल के गाल पर एक हल्की सी चपत लगाई ।

देखते ही देखते सेशन खत्म हो गया। युवकों ने समर कैम्प में हुए अद्‌भुत अनुभवों को शेयर किया। कैम्प में सीखी हुई बातें दैनिक जीवन में अप्लाय करने का निश्चय करके सब विदा हुए।

अपूर्व भाई, आपकी बाइक पर राइड मिलेगी?

दोस्त, बाइक तो आज बीमार हो गई है। लेकिन चल, तुझे रिक्शे से घर छोड़ दूँ। तुम्हारा घर तो रास्ते में ही आता है।

अपूर्व भाई और सौमिल रिक्शा स्टैंड की ओर जा रहे थे, अचानक बाइक पर दो भाई आए। अपूर्व भाई की जेब से वॉलेट छीनकर भाग गए।

चोर, चोर, चोर... कोई पकड़ो...

लेकिन, बाइक की स्पीड की कोई बराबरी नहीं कर पाया।

सौमिल, हम रिक्शा से घर चलते हैं। फिर सोचते हैं कि क्या हो सकता है।

अपूर्व भाई की स्थिरता देखकर सौमिल को बहुत ही आश्चर्य हुआ! वॉलेट चोरी हो गया लेकिन अपूर्व भाई के चेहरे पर बिल्कुल भी परेशानी या चिंता नहीं दिख रही थी।

रिक्शे में बैठकर अपूर्व भाई ने अपनी नोटबुक खोली और कुछ लिखा।

क्या लिख रहे हो अपूर्व भाई?

अपूर्व भाई ने नोटबुक सौमिल के हाथ में दी। सुंदर अक्षरों में लिखा था...

"आज मेरा वॉलेट चोरी हुआ है, मुझे कोई चोट नहीं आई है।"

"मुझे इसकी खुशी भी है कि आज से पहले मेरे साथ ऐसा कभी नहीं हुआ है।"

"और मुझे इस बात की भी खुशी है कि जिसने चोरी की, उसके लिए मेरे दिल में कोई नेगेटिविटी नहीं है, बल्कि उसका भला हो ऐसी प्रार्थना है।"

अपूर्व भाई के लिखे हुए शब्द सौमिल के दिल में समा गए। सेशन में अपूर्व भाई ने कहा था, "परिणाम लाए वह धर्म।"